वेदों में बताया यही विधान। यज्ञ से होगा रोग निदान॥

यज्ञ मानवीय चेतना का उत्कर्ष करके
हमें अति मानस चेतना की ओर
अग्रसर करता है।
यज्ञ के अनुष्ठान से पंचप्राण, पंच उपप्राण,
सप्तधातुओं का पोषण करने के साथ ही
मूलाधार से लेकर सहस्रार
पर्यन्त अष्टचक्रों में शक्ति का संचार करता है।

यज्ञो दानं तपश्चैव पावनानि मनीषिणाम्। -गीता - 18.5
यज्ञ, दान व तप ये कर्म मनुष्यों को पवित्र करने वाले हैं।